M.A. Fourth Semester

Third Paper

Agriculture Geography

BY

Dr. Shivanand Yadav

Assistant professor and Head

Department of Geography

Harishchandra P.G.College ,Varanasi

प्रश्न: भारत के सन्दर्भ में फसल संयोजन प्रदेश एवं कृषि प्रदेश में अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा देश के किसी एक कृषि प्रदेश का संक्षिप्त विवरण भी दीजिए।

या

भारत को कृषि प्रदेशों में बाँटिये तथा इसके विभाजन के आधार को वर्णित कीजिए।

या

भारत के शस्य सम्मिश्रण प्रदेश का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए एवं भारत में कृषि प्रादेशीकरण के लिए किसी एक विधि को सुझाइये।

उत्तर :- कृषि प्रदेश :- कृषि प्रदेश ऐसे विस्तृत क्षेत्र होते हैं जहाँ कृषि सम्बन्धी दशाओं विशेष रूप से फसलों के प्रकार एवं उनकी उत्पादन विधि में समरूपता मिलती है तथा कृषि भूमि का उपयोग भी विशेष प्रकार की सम्बद्धता रखता है। भारत में भौगोलिक विभिन्नताओं ने कृषि फसलों में अनेक विभिन्नताओं को जन्म दिया है। तापमान, वर्षा का वितरण, धरातलीय दशा, मिट्टी का प्रकार, फसलों एवं पशुओं के सहसम्बन्ध, कृषि उत्पादन विधि आदि बातों ने विभिन्नताओं को जन्म दिया है ये सभी बातें भारत को कृषि प्रदेशों में बाँटने का आधार प्रदान करती है।

भारत को कृषि प्रदेशों में बाँटने का प्रयास अनेक विद्वानों ने किया है। मोटे तौर पर उनके विचार दो वर्गों में रखे जा सकते हैं।

(i) प्रथम वर्ग में प्राकृतिक बातों को महत्व देते हुए भारत को कृषि प्रदेशों में बाँटा गया है।

(ii) द्वितीय वर्ग में फसलों की प्रमुखता को महत्व देते हुए भारत के फसल समूह प्रदेश (Crop-Combination Region) बताये गये हैं।

फसलों की प्रधानता के आधार पर कृषि प्रदेशों को निर्धारित करने वाले विद्वानों में, C.B. मामोरिया

R.L. Singh तथा रवे-धर विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। सभी फसलों में जो फसलें सबसे अधिक क्षेत्र पर उगायी जाती हैं उसके आधार पर इन प्रदेशों का नामकरण किया जाता है। जिस क्षेत्र में जिन फसलों की प्रधानता होती है वहाँ पर कृषिगत तथा भौतिक दशाएं भी लगभग समान होती हैं कुछ लोगों ने इसका नाम फसल समूह प्रदेश (Crop association Region) रखा है। हमारे देश में कई फसलें एक साथ उगायी जाती हैं उसमें एक न एक खाद्यान्न अवश्य ही अपना स्थान रखता है। इसीलिए भारत को गेहूँ, चावल, ज्वार, बाजरा तथा पेय फसल धान की प्रधानता के आधार पर 16 फसल प्रदेशों में बाँट सकते हैं।

भारत के कृषि साहचर्य प्रदेश :- (A.A.R of India)

(क) गेहूँ की सहचरी फसलों के विचार से फसल साहचर्य प्रदेश :-

(I) गेहूँ, बाजरा, तिलहन, कपास, गन्ना प्रदेश :- इसका विस्तार पंजाब, हरियाणा तथा उ० प्र० के उन भागों पर है जहाँ वर्षा की मात्रा 60 cm से कम रहती है। रबी की प्रमुख फसल गेहूँ है तथा खरीफ में बाजरा पैदा होता है। गन्ना दो फसली है।

(II) गेहूँ, जौ, ज्वार, दलहन, गन्ना प्रदेश :- पूर्वी उ० प्र० तथा बिहार पर विस्तृत है, खरीफ में ज्वार व दलहन का प्रमुख स्थान है।

(III) गेहूँ बाजरा, कपास प्रदेश :- पश्चिमी व पूर्वी राजस्थान पर विस्तृत है। रबी में गेहूँ व खरीफ में बाजरा एवं कपास की खेती होती है।

(ख) धान की सहचरी फसलों के विचार से साहचर्य प्रदेश :-

(IV) धान, जूट क्षेत्र :- उ० प्र०, बिहार, प० बंगाल तथा उड़ीसा।

(V) धान गन्ना क्षेत्र :- उ० मैदान के तराई क्षेत्रों पर विस्तृत।

(VI) धान मक्का-तिलहन एवं दाल क्षेत्र :- बिहार राज्य में।

(VII) धान-गन्ना-गेहूँ-तिलहन क्षेत्र :- पू० मध्यप्रदेश तथा उ० पू० महाराष्ट्र।

(VIII) धान-गन्ना-बाजरा-दाल क्षेत्र :- आन्ध्र प्रदेश में

(IX) धान-गन्ना-मूँगफली दाल क्षेत्र :- तमिलनाडु, कर्नाटक के पठारी भाग।

(x) धान-कपास-तम्बाकू क्षेत्र :- गुजरात के समुद्र तटीय क्षेत्रों में।

(xi) धान नारियल क्षेत्र :- पश्चिमी समुद्र तट तथा नदी डेल्टाओं पर विस्तृत है।

(ग) ज्वार-बाजरा की सहचारी फसलों के विचार से फसल साहचर्य प्रदेश :—

(xii) ज्वार-कपास-गेहूँ तिलहन दाल क्षेत्र :- M.P., महाराष्ट्र तथा उत्तरी कर्नाटक। खरीफ में ज्वार कपास तथा रबी में गेहूँ व तिलहन उगायी जाती है।

(xiii) ज्वार-बाजरा-तिलहन दाल क्षेत्र :- महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक

(xiv) बाजरा दाल गन्ना मूँगफली क्षेत्र :- प० घाट का पूर्वी प्रदेश जो पूना से लेकर द० केरल तक फैला है।

(घ) चाय की सहचरी फसलों के विचार से साहचर्य प्रदेश :

(xv) चाय-धान-तम्बाकू क्षेत्र :- असम राज्य में।

(xvi) चाय रबड़ क्षेत्र :- अरुणाचल-केरल एवं तमिल नाडु में।

डा० रंधावा के अनुसार भारत के कृषि प्रदेश

(1) **शीतोष्ण हिमालय प्रदेश** :- (Temperate Himalayan Region)

(क) पू० हिमालय प्रदेश :- अरुणांचल प्रदेश, उत्तरी असम, सिक्किम व भूटान शामिल है।

(ख) प० हिमालय प्रदेश :- उ० प्रदेश के पर्वतीय भाग, हिमांचल प्रदेश व जम्मू कश्मीर राज्य शामिल है।

(2) **उत्तरी-शुष्क गेंहू उत्पादक प्रदेश** :- (Northern Dry Wheat Region) पंजाब, हरियाणा, प० यू० पी०, दिल्ली, चण्डीगढ़, राजस्थान, एम.पी. व गुजरात शामिल है।

(3) **पूर्वी तर चावल उत्पादक प्रदेश** :- (Eastern-wet Rice Region) असम, मेघालय, नागालैण्ड मणिपुर त्रिपुरा, मिजोरम, पं० बंगाल, बिहार, उड़ीसा, पू० मध्य प्रदेश एवं पू० उ० प्र० तथा आन्ध्र प्रदेश।

(4) **मालाबार नारियल अथवा पश्चिमी तर प्रदेश** :- (Malabar Coconut or Western Wet Region) ⇒ प० तट व पू० तट का द० भाग तथा उसका समीपवर्ती क्षेत्र शामिल है जो केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र व तमिलनाडु के सीमावर्ती भागों पर विस्तृत है।

(5) **दक्षिणी मध्यम वर्षा मोटा अनाज उत्पादक प्रदेश** (South Medium Rainfall or Millet Region) एम.पी. का प० द० भाग, यू० पी० का पश्चिमी पठारी भाग, पूर्वी महाराष्ट्र, दक्षिणी गुजरात, प० आन्ध्र प्रदेश, तामिलनाडु और कर्नाटक के पूर्वी क्षेत्र शामिल हैं।

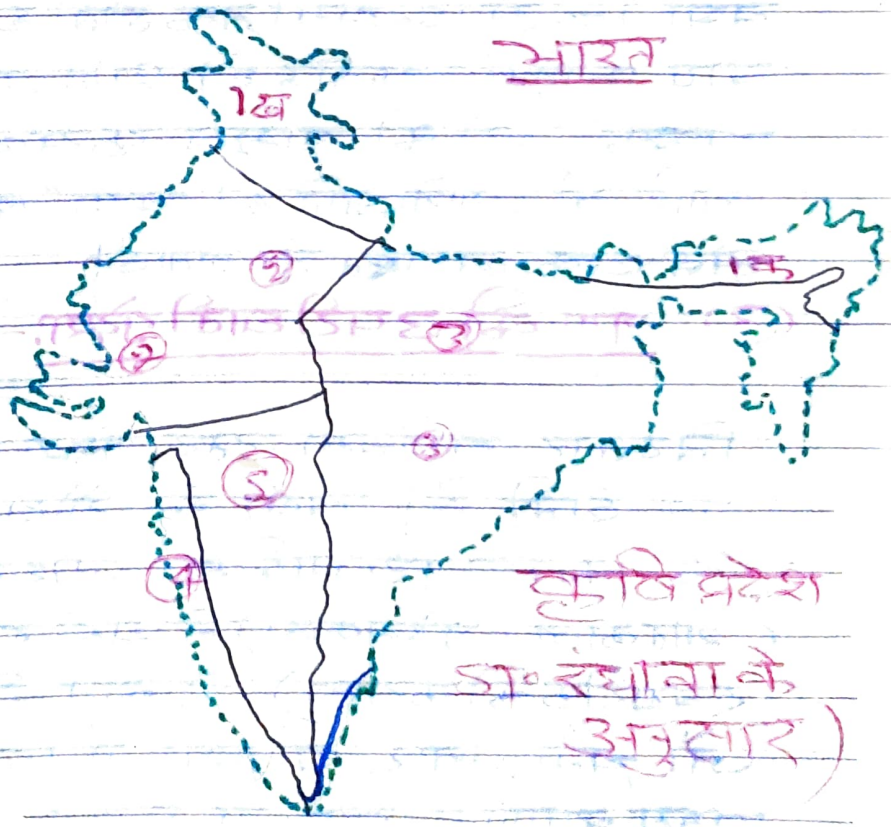

डा॰ रामनाथ दूबे के अनुसार भारत के कृषि प्रदेश

इनका वर्गीकरण वर्षा की मात्रा एवं मिट्टी की विशेषता पर आधारित है। भारत के उत्तरी मैदानी भाग को विभाजित करने में वर्षा की मात्रा तथा दक्षिणी भारत को मिट्टी की विशेषता के आधार पर निम्नांकित कृषि प्रदेशों में बाँटा गया है।

(A) वर्षा की मात्रा के आधार पर :-

(1) निचली गंगा घाटी एवं ब्रह्मपुत्र घाटी प्रदेश - इस प्रदेश में पं॰ बंगाल असम व उसके समीपवर्ती सभी राज्य व बिहार के कुछ भाग शामिल हैं। वर्षा 130 से 250 सेमी तक होती है। तापमान सदैव ऊँचा रहता है। कांप मिट्टियाँ काफी उपजाऊ है। खादों का प्रयोग बहुत कम होता है। यहाँ चावल जूट और चाय प्रमुख फसलें हैं। तिलहन गन्ना भी उगाया जाता है। वर्षा की अधिकता के कारण सिंचाई के साधनों की आवश्यकता कम है।

(2) गंगा की मध्यवर्ती घाटी प्रदेश :- इसमें बिहार का अधिकांश भाग, पूर्वी उ॰प्र॰ शामिल है। वर्षा 100 से 130 सेमी तक होती है। तापमान सदैव ऊँचे रहते हैं। कांप मिट्टियाँ उपजाऊ है। शीत ऋतु में तापमान कम रहता है। चावल यहाँ की प्रमुख फसल है। गेहूं, जौ, गन्ना, चना, मक्का आदि भी उगाये जाते हैं। वर्षा की अनिश्चितता के कारण यह क्षेत्र अकाल ग्रस्त हो जाता है।

(3) गंगा की ऊपरी घाटी प्रदेश :- यह देश का सबसे उत्तम कृषि प्रदेश माना जाता है। इसका विस्तार पश्चिमी उत्तर प्रदेश पर है। वर्षा 75 से 100 सेमी तक होती है। वर्षा के मौसमी वितरण के असमानता के कारण सिंचाई का अधिक महत्व है। तापमान की विभिन्नता (शीतकाल - ग्रीष्मकाल) ने यहाँ पर फसलों को दो भागों (रबी एवं खरीफ की फसल) में बाँट दिया है। गेहूँ प्रमुख खाद्यान्न है जौ चना ज्वार बाजरा मक्का तथा चावल भी महत्वपूर्ण प्रमुख व्यापारिक फसल गन्ना है। पशुपालन भी होता है। नहरें

नलकूप सिंचाई के प्रमुख साधन हैं।

(4) सतलज प्रदेश :- (The Sutlej Region) इसका विस्तार पंजाब, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश के कुछ भागों पर है। वर्षा 50-75 सेमी है। शीतकालीन प्रमुख फसलें गेहूँ हैं। गन्ना व कपास अन्य प्रमुख फसलें हैं। नहरें सिंचाई के साधन हैं।

(5) मरुस्थलीय प्रदेश :- (The Desert Region) सम्पूर्ण राजस्थान तथा उ० पश्चिम गुजरात पर इस प्रदेश का विस्तार है। वर्षा 30 सेमी है। मिट्टी उर्वरायुक्त है। ज्वार-बाजरा, मोठ प्रमुख फसलें हैं। हरित क्रान्ति के कारण उत्पादन काफी बढ़ा है।

(B) मिट्टी की विशेषता के आधार पर :-

(6) काली मिट्टी का प्रदेश :- (The Black Soil Region) प्रायद्वीपीय भारत के प० भाग, महाराष्ट्र, गुजरात, एम पी, कर्नाटक एवं आन्ध्र प्रदेश राज्यों के क्षेत्र हैं। वर्षा 75-100 सेमी है। तापमान वर्ष भर ऊँचा रहता है। अधिकांश कृषि बिना सिंचाई के होती है। कपास प्रमुख फसल है, गेहूँ ज्वार बाजरा भी होता है।

(7) लाल व पीली मिट्टी का प्रदेश :- कर्नाटक, महाराष्ट्र उड़ीसा, आन्ध्र, तामिलनाडु वर्षा 75-125 cm। ताप ऊँचा रहता है। फसलें ज्वार, बाजरा, मूँगफली तथा कपास है। सिंचाई तालाबों से होती है।

(8) तटीय मैदान (Coastal Plain) गोदावरी, कृष्णा, कावेरी के डेल्टा तथा मालाबार तट महत्वपूर्ण हैं। चावल प्रमुख फसल है। गन्ना, कपास तम्बाकु, नारियल, गर्म मशाले आदि गौण फसलें हैं। सिंचाई नहरों द्वारा होती है।

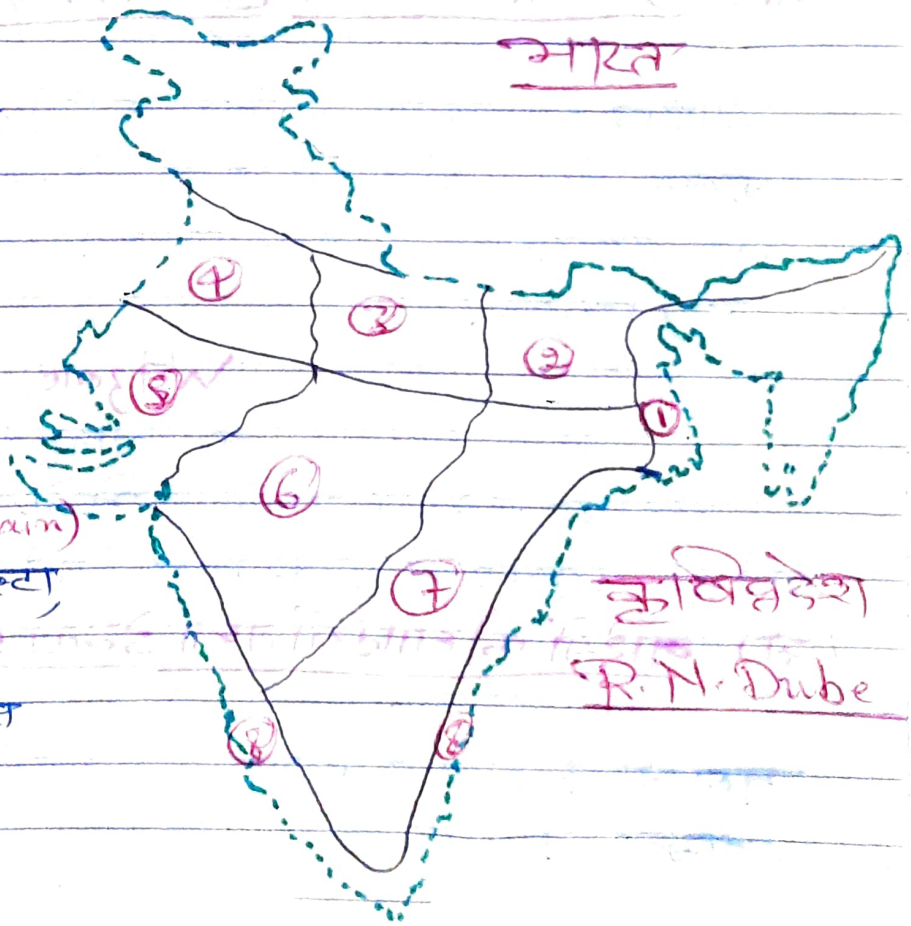

पी. सेनगुप्ता एवं ड्यूक के अनुसार कृषि प्रदेश

इन्होंने (Economic Regionalisation of India) नामक पुस्तक में भारत के कृषि प्रदेश जलवायु विशेषतया वर्षा के आधार पर बताए हैं। यह विभाजन काफी उपयुक्त है। इन्होंने चार मुख्य व 60 सूक्ष्म कृषि प्रदेश बताए हैं।

1) हिमालय कटिबन्ध :- इस कटिबन्ध के अन्तर्गत उत्तर भारत का समस्त पर्वतीय भाग स्थित है। इसके कुल 7% भूमि पर खेती होती है। वर्षा का औसत 100-200 सेमी के बीच है। इसको दो भागों में बाँटा गया है।

(अ) पश्चिमी हिमालय कृषि प्रदेश :- इसमें जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा उ० प्र० का पर्वतीय भाग शामिल है। कश्मीर घाटी कृषि के लिए महत्वपूर्ण है। गेहूँ, चना, मक्का, चावल, आलू प्रमुख फसलें हैं। रेशम के कीड़े पाले जाते हैं। इस प्रदेश को भी (i) कश्मीर हिमालय (ii) कुमायूँ हिमालय (iii) कश्मीर घाटी उप प्रदेशों में बाँटा गया है।

(ब) पूर्वी हिमालय कृषि प्रदेश :- इसमें पं० बंगाल (दार्जिलिंग) सिक्किम, असम हिमालय शामिल हैं। वर्षा अधिक होती है। चावल व चाय प्रमुख फसलें हैं। सीढ़ीदार खेतों में कृषि भी की जाती है। (i) दार्जिलिंग व सिक्किम हिमालय (ii) असम हिमालय उप विभाग हैं।

(2) आर्द्र कटिबन्ध :- Wet zone प्रायद्वीपीय पठार के उ० पू० का भाग (पं० बंगाल, द० बिहार, मेघालय, असम, मणिपुर, त्रिपुरा, नागालैण्ड, मिजोरम) पर विस्तार है। वर्षा 100-250 सेमी है। सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसके चार उप विभाग हैं।

(अ) नदियों की घाटियां तथा डेल्टा प्रदेश :- ब्रह्मपुत्र घाटी से गंगा डेल्टा से होकर महानदी डेल्टा तक। गहरी काँप मिट्टी मिलती है। जूट, चाय प्रमुख फसलें हैं। तिलहन भी उगाया जाता है।

(क) उ० पू० प्रायद्वीपीय पठार प्रदेश :- उपरी नर्मदा घाटी, महादेव मैकाल पहाड़ियाँ, बुन्देलखण्ड व छोटा नागपुर का पठार, ऊपरी महानदी बेसिन, उ० उड़ीसा की पहाड़ियाँ व पठार, बस्तर व कोरापुट की पहाड़ियाँ द० उड़ीसा का पहाड़ी क्षेत्र तथा बाल गंगा बेसिन है। चावल प्रधान फसल है। मक्का, ज्वार, बाजरा, तिलहन भी होता है।

(ख) पूर्वी पहाड़ियाँ एवं पठार प्रदेश :- चावल प्रमुख फसल है। यहाँ आदिवासी लोग झूमिंग कृषि करते हैं। चाय, आलू, गन्ना अन्य फसलें हैं।

(द) पश्चिमी तटीय प्रदेश :- अरब सागर के किनारे गुजरात से लेकर केरल तक है। ऊँचा तापमान व भारी वर्षा इस प्रदेश की विशेषता है। बागाती खेती का काफी प्रचार है। चावल प्रमुख है। चाय, कहवा, रबड़, नारियल, गर्म मसाले आदि के बाग मिलते हैं।

(3) उपआर्द्र कटिबन्ध :- (Sub Humid zone) उपरी व मध्य गंगा का मैदान, द० भाग, बुन्देलखण्ड के पठार से लेकर पूर्वी तटीय प्रदेश के मध्य पठारी भाग, पूर्वी तटीय मैदान व नदियों के डेल्टाई भाग। वर्षा 75-100 सेमी। गन्ना, चावल, गेहूँ, जूट, मक्का, ज्वार मूँगफली। इसके दो उपविभाग हैं।

(अ) उपरी एवं मध्य गंगा का मैदान।

(ब) उप आर्द्र प्रायद्वीपीय पठार - मालवा पठार, राजस्थान का मैदान, ताप्ती नदी, द० पू० महाराष्ट्र पठार, उ० तेलंगाना पठार, द० तेलंगाना तथा कर्नाटक पठार। उ० द० बुन्देलखण्ड वर्धा बेसिन, तमिल नाडु का पठार। कपास, गन्ना, गेहूँ की कृषि होती है।

(4) शुष्क कृषि कटिबन्ध (Dry Agricultural zone) वे क्षेत्र जहाँ कृषि कार्य के लिए जल का अभाव है। इसे दो उप प्रदेशों में बाँटा गया है।

(अ) शुष्क उत्तरी पश्चिमी प्रदेश :- इसमें हरियाणा व राजस्थान का मैदान, गुजरात का उ० प० शुष्क भाग शामिल है। ज्वार, बाजरा, तिलहन प्रमुख हैं। यहाँ दुधारु पशुओं की

उत्तम नस्लें पायी जाती हैं।

(ब) शुष्क प्रायद्वीपीय प्रदेश :- यह प्रदेश पश्चिमी घाट के पृष्ठ प्रदेश (महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश तथा उ०प० तमिलनाडु राज्यों) पर फैला है। यह वृष्टिछाया प्रदेश है। वर्षा का अभाव व मिट्टी कम उपजाऊ है। ज्वार बाजरा प्रमुख फसल है।